International Journal of Applied Research 2019; 5(1): 411-414

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2019; 5(1): 411-414
www.allresearchjournal.com
Received: 19-11-2018
Accepted: 17-12-2018

दीपक महतो
शोधार्थी समाजशास्त्र विभाग, ल. ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
दीपक महतो
शोधार्थी समाजशास्त्र विभाग, ल. ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

वैश्वीकरण के दौर में मुस्लिम समुदाय

दीपक महतो

प्रस्तावनाः
वैश्वीकरण का अभिप्राय अर्थव्यवस्थाओं के बीच आदान–प्रदान तथा सामंजस्य के विविध पक्षों से जुड़ा होना है। उदाहरणस्वरूप वैश्वीकरण के अंतर्गत भारत की अर्थव्यवस्था के साथ सामंजस्य के आधार पर आदान–प्रदान की प्रक्रिया से संबंधित हो गई है। वैश्वीकरण में अब कोई राष्ट्र अलग–थलग नहीं रह सकता है। अनेक विदेशी उत्पादक अब भारत में अपना माल तथा सेवाएँ बेच सकते हैं। भारत के उत्पादनों को भी दूसरे देशों में बेचा जा सकता है। वैश्वीकरण ने पूँजी निवेश के दरवाजे भी खोल दिए हैं। इस प्रक्रिया के अंतर्गत विभिन्न देशों ने अर्थव्यवस्था से जुड़ी एक प्रक्रिया है। परंतु समाज के विभिन्न पक्षों पर वैश्वीकरण की प्रक्रिया का तीव्र अनुभव किया गया है। अतः समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में गहन एवं गंभीर अध्ययन के बाद विद्वानों ने वैश्वीकरण की अवधारणा को स्पष्ट किया है। एंथोनी गिडेन्स की एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक ''जैम ब्वदेमुनमदबमे व िडवकमतदपजल'', सन् 1990 में प्रकाशित हुई। उनके अनुसार वैश्वीकरण को समय स्थान विस्तारीकरण है। गिडेन्स ने वैश्वीकरण की परिभाषा में निम्नलिखित बिन्दुओं को स्पष्ट किया है :
गिडेन्स के अनुसार वैश्वीकरण में समय और स्थान की दूरी सिमट जाती है अर्थात् जापान की कोई बहुराष्ट्रीय कंपनी हरियाणा के किसी हिस्से में अपने उद्योग को स्थापित कर सकती है। इस तरह दुनिया का कोई भी सक्षम व्यक्ति भारत में पूँजी निवेश कर सकता है। इस प्रकार समय और स्थान का कोई बंधन नहीं है।
वैश्रीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विस्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्तकरने किया जा सकता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है। वैश्वकरण का उपयोग अक्सर आर्थिक वैश्वीकरण के सन्दर्भ में किया जाता है, अर्थात व्यापार, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, पूंजी प्रवाह, प्रवास और प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में एकीकरण। टॉम जी काटो संस्थान ;ब्जव प्देजपजनजमद्ध के पामर ;ज्वउ ळण् ब्सउमतद्ध ''वैश्वकरण'' को निम्न रूप में परिभाषित करते हैं'' सीमाओं के पर विनिमय पर राज्य प्रतिबंधों का ह्रस या विलोपन और इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ उत्पादन और बज जाता है। विनिमय का तीव्र एकीकृत और जटिल विश्व स्तराय तत्र ''यह अर्थशास्त्रियों के द्वारा दी गई सामान्य परिभाषा है, अक्सर श्रम विभाजन ;कपअपेपवद व िसंइवतद्ध के विश्व स्तरीय विस्तार के रूप में अधिक साधारण रूप से परिभाषित की जाती है।
थामस एल फ्राइडमैन ;जीवउें स्ण् थ्तपमकउंदद्ध '' दुनिया के 'सपाट' होने के प्रभाव की जांच करता है'' और तर्क देता है कि वैश्वकृत व्यापार ;हसवइंसप्रमक जतंकमद्धए आउटसोर्सिंग ;वनजेवनतबपदहद्धए आपूर्ति के श्रृंखलन ;नचचसल.बींपदपदहद्ध और राजनीतिक बलों ने दुनिया को, बेहतर और बदतर, दोनों रूपों में स्थायी रूप से बदल दिया है। वे यह तर्क भी देते हैं कि वैश्वीकरण की गति बढ़ रही है और व्यापार संगठन तथा कार्यप्रणाली पर इसका प्रभाव बढ़ता ही जाएगा।
नेअम चोमस्की का तर्क है कि सैद्वांतिक रूप में वैश्वकरण शब्द का उपयोग, आर्थिक वैश्वीकरण ;मबवदवउपब हसवइंसप्रंजपवदद्ध के नव उदार रूपक ा वर्णन करने में किया जाता है।
हर्मन ई. डेली ;भ्मतउंद म्ण् क्ंसलद्ध का तर्क है कि कभी कभी अंतर्राष्ट्रीयकरण और वैश्वीकरण शब्दों का उपयोग एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है लेकिन औपचारिक रूप से इनमें मामूली अंतर है। शब्द ''अंतर्राष्ट्रीयकरण'' शब्द का उपयोग अंतरराष्ट्रीय व्यापार, संबंध और संधियों आदि के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय का अर्थ है राष्ट्रों के बीच।
''वैश्वीकर का अर्थ है आर्थिक प्रयोजनों के लिए राष्ट्रीय सीमाओं का विलोपन, अंतरराष्ट्री व्यापार तुलनात्मक लाभ ;बवउचंतंजपअम कंअंदजंहमद्ध द्वारा शासित), अंतर क्षेत्रीय व्यापार पूर्ण लाभ ;इेवसनजम कंअंदजंहमद्ध द्वारा शासित) बन जाता है।
द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से वैश्रीकरण मुख्य रूप से अर्थशास्त्रीयों, व्यापारिक हितों और राजनीतिज्ञों के नियोजन का परिणाम है जिन्होने संरक्षणवाद ;चतवजमबजपवदपेउद्ध और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक एकीकरण में गिरावट के मूल्य को पहचाना।
उनके काम का नेतृत्व ब्रेटन वुड सम्मेलन ;ठतमजजवद ॅववके बवदमितमदबमद्ध और इस दौरान स्थापित हुई कई अंरराष्ट्रीय संस्थाओं ने किया, जिनका उद्देश्य वैश्वीकरण की नवीनीकृत प्रक्रिया का निरीक्षण, इसको बढ़ावा देने और इसके विपरीत प्रभावों का प्रबंधन करना था।

इन संस्थाओं में पुनर्निर्माण और विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय बैंक (विश्व बैंक) और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ;प्दजमतदंजपवदंस डवदमजंतल थ्नदकद्ध शामिल हैं। वैश्वीकरण में तकनीक के आधुनिकीकरण के कारण यह सुविधा हुई, जिसने व्यापार और व्यापार वार्ता दौर की लागत को कम कर दिया, मूल रूप से शुल्क तथा व्यापार पर सामान्य समझौते ;ळमदमतंस ।हतममउमदज वद ज्तपर्गिदक ज्तंकमद्ध ;ळ।ज्ज्द्ध के तत्वावधान के अंतर्गत ऐसा हुआ है जिसके चलते कई समझौतों में मुक्त व्यापार ;तिमम जतंकमद्ध पर से प्रतिबन्ध हटा दिया गया।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से, अंतरराष्ट्रीय व्यापार अवरोधों में अंतरराष्ट्रीय समझौतों ळ।ज्ज के माध्यम से लगातार कमी आई है। ळ।ज्ज के परिणामस्वरूप कई विशेष पहल की गईं और इसमें विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ), जिसके लिए ळ।ज्ज आधार है, शामिल है।

मुक्त व्यापार का संवर्धनः

शुल्क ;जंतपद्धि में कमी या समाप्तिः कम या शून्य शुल्क के साथ मुक्त व्यापार क्षेत्र ;तिमम जतंकम्‌ वदमद्ध का निर्माण

विशेष रूप से समुद्र नौवहन के लिए डिब्बाबंदीकरण ;बवदजंपदमतप्रंजपवदद्ध के विकास के परिणामस्वरूप होने वाले परिवहन मूल्य में कमी।

पूँजी नियंत्रण ;बंचपजंस बवदजतवसेद्ध में कमी या कटौती

स्थानीय व्यवसाय के लिए सब्सिडी ;नइेपकपमेद्ध में कटौती, उन्मूलन, या सम्मिश्रण

मुक्त व्यापार पर प्रतिबंध :

कई राज्यों में बैद्धिक संपदाके हार्मोनीकरण कानून अधिक प्रतिबंधों के साथ लागू हैं।

बौद्धिक संपदा प्रतिबंधें की पराराष्ट्रीय मान्यता (उदा. चीन से प्राप्त पेटेंट अमेरिका में मान्य होगा)

उरुग्वे वार्ता ;न्तनहनंल त्वनदकद्ध (1984 से 1995) में एक संधि हुई, जिसके अनुसार ॅज्व् व्यापारिक विवादों में मध्यस्थता करेगा और व्यापार के लिए एक एकीकृत मंच उपलब्ध कराएगा. अन्य द्विपक्षीय और बहुपक्षीय व्यापार समझौते जिसमें मास्ट्रिच संधि ;डेंजतपबी ज्तमंजलद्ध और उत्तरी अमेरिका मुक्त व्यापार समझौते ;छवतजी ।उमतपबंद थ्तमम ज्तंकम ।हतममउमदजद्ध (एन ऐ एफ टी ऐ) शामिल हैं, का लक्ष्य भी व्यापार के अवरोधों और मूल्यों को कम करना है।

विश्व निर्यात में वृद्धि हुई है जो 1970 में विश्व सकल उत्पाद ;हतवे ूवतसक चतवकनबजद्ध के 9.5+ से बढ़कर 2001 में 16.1ः हो गया।

वैश्वीकरण शब्द क उपयोग (सैद्धांतिक मायने में) इन विकासो के संदर्भ में विश्वलेषण के लिए नोएम शोमस्की समेत कईयों के द्वारा किया गया।

आलोचकों ने देखा है कि समकालीन उपयोग में इस शब्द के कई अर्थ हैं, उदाहरण के लिए छवंउ बिवउेल कहते हैं कि

वैश्वीकरण के कई पहलू हैं जो दुनिया को कइ भिन्न प्रकार से प्रभावित करते हैं जैसे औद्योगिक (उर्फ ट्रांस राष्ट्रीयकरण) – विश्व व्यापी उत्पादन बाजारों का ﹔दव और उपभोक्ताओं तथा कंपनियों के लिए विदेशी उत्पादों की एक श्रृंखला तक व्यापक पहुँच.ट्रांस राष्ट्रीय निगमों के अन्दर और श्रम आपूर्ति करने वाले गरीब देशो और लोगों के व्यय पर, संपन्न राष्ट्रों और लोगों की माल तक पहुँच.

वित्तीय विश्व व्यापी वित्तीय बाजार की उत्पात्ति और राष्ट्रीय, कॉर्पोरेट और उप राष्ट्रीय उधारकार्ताओं के लिए बाह्य वित्त पोषण करने के लिए बेहतर पहुँच। आवश्यक रूप से नहीं, परंतु समकालीन वैश्विकता अधीन या गैर–नियामक विदेशी आदान–प्रदान का उद्‌भव है और सट्टा बाजार निवेशकों के मुद्रास्फीति और वस्तुओं, माल की कृत्रिम मुद्रा स्फीति की तरफ बढ़ रहा है और कुछ मामलों में एशियाई आर्थिक उछाल के साथ सभी राष्ट्रों का इसकी चपेट में आना मुक्त व्यापार ;षितममष जतंकमद्ध के द्वारा हुआ है।

आर्थिक–माल और पूंजी के विनियम की स्वतंत्रता के आधार पर एक वैश्विक साझा बाजार की वास्तविकता।

राजनीतिक – राजनैतिक वैश्वीकरण विश्व सरकार का एक गठन है जो राष्ट्रों के बीच सबंध का नियमन करता है तथा सामाजिक और वैश्वीकरण से उत्पन्न होने वाले अधिकारों की गारंटी देता है। राजनीतिक रूप से, संयुक्त राज्य अमेरिका ने विश्व शक्तियों के बीच एक शक्ति के पद का आनंद उठाया हैः ऐसा इसकी प्रबल और संपन्न अर्थव्यवस्था के कारण है।

वैश्वीकरण के प्रभाव के साथ और संयुक्त राज्य अमेरिका की अपनी अर्थव्यवस्था, की मदद के साथ चीन के जनवादी गणराज्य ने पिछले दशक में जबरदस्त विकास का अनुभव किया है। यदि चीन प्रवृत्तियों द्वारा निर्धारित इसी दर से विकास करता रहा, तो बहुत संभव है कि अगले बीस वर्षों में वह विश्व नेताओं के बीच सत्ता की एक प्रमुख धुरी बन जाएगा। चीन के पास प्रमुख विश्व शक्ति के पद के लिए अमरीका का विरोध करने हेतु पर्याप्त धन, उद्योग और तकनीक होगी। यूरोपीय संघ, रूसी संघ और भारत पहले से ही स्थापित विश्व शक्तियों में हैं जिनके पास संभवतया भविष्य में दुनिया की राजनीति को प्रभावित करने की क्षमता है।

सूचनात्मक – भौगोलिक दृष्टि से दूरस्थ स्थानों के बीच सूचना प्रवाह में वृद्धि। तार्किक रूप से फाइबर ऑप्टिक संचार, उपग्रहों के आगमन और इंटरनेट और टेलीफोन की उपलब्धता में वृद्धि के साथ यह एक तकनीकी परिवर्तन है। जो संभावतः वैश्वीकरण के आदर्शवाद से असंबद्ध या इसमें सहयक है।

सांस्कृतिक – पार – सांस्कृतिक संपर्कों की वृद्धि चेतना ;बवदेबपवनेदमेद्ध की नई श्रेणियों का अवतरण और पहचान जैसे विश्विकता–इसमें शामिल है सांस्कृतिक प्रसार, विदेशी उत्पादों और विचारों का उपभोग ;बवदेनउमद्ध करने और आनंद उठाने की इच्छा, नई प्रौद्योगिकी और पद्धतियों को अपनाना और ''विश्व संस्कृति'' में भाग लेना; भाषाओं की हानि (और इसी क्रम में विचारों की हानि), साथ ही देखें संस्कृति का रूपांतरण ;ज्तंदेवितउंजपवद व िबनसजनतमद्ध।

पारिस्थितिकी– वैश्विक पर्यावरण का आगमन चुनौती देता है जिसे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, के बिना हल नहीं किया जा सकता है, जैसे जलवायु परिवर्तन ;बसपउंजम बिंदहमद्ध सीमा पार जल और वायु प्रदूषण, समुंद्र में सीमा से ज्यादा मछली पकड़ना और आक्रामक प्रजातियों के प्रसार विकासशील देशों में, कई कराखानों का निर्माण किया गया है, जहाँ वे स्वतंत्र रूप से प्रदुषण कर सकते हैं। वैश्विकता और मुक्त व्यापार प्रदूषण बढाने के लिए अन्योन्य क्रिया करते हैं और एक गैर पूंजीवादी विश्वमें हमेशा से विकसित हो रही पूंजीवादी अथव्यवस्था के नाम पर इसे त्वरित करते है। हानि फिर से गरीब राष्ट्रों के हिस्से में आती है जबकि लाभ संपन्न राष्ट्रों के हिस्से में

सामाजिक – कम प्रतिबंधों के साथ सभी राष्ट्रों के लोगों के द्वारा प्रवाह में वृद्धि हुई है। कहा जाता है कि इन देशो के लोग इतने संपन्न है कि वे अंतरराष्ट्रीय यात्रा का खर्च वहन करते सकते है, जिसे दुनिया की धिकांश जनसँख्या वहन नही कर सकती है। अभिजात्य और संपन्न वर्ग के द्वारा मान्यता प्राप्त एक भ्रमित 'लाभ', जों ईंधन और परिवहन की लागत में वृद्धि के साथ बढ़ता है।

वैश्वीकरण परस्पर निर्भरता, सामंजस्य एवं समझौता के सिद्धांत पर आधारित है। इसके अंतर्गत एक देश की अर्थव्यवस्था का दूसरे देश की अर्थव्यवस्था के साथ परस्पर आदान–प्रदान तथा सामंजस्य होता है।

एंथोनी गिडेन्स ने यह भी स्पष्ट किया है कि वैश्वीकरण में वैज्ञानिक तकनीकों का विशेष महत्त्व है। वैज्ञानिकों के कारण ही समय तथा दूरी सिमटती जा रही है। अब ई–मेल के द्वारा हम

व्यापारिक कारोबार कर सकते है। उपग्रह के सहारे पलक झलकते दुनिया की घटनाओं की तस्वीर ले सकते हैं। टेलीविजन के सामने बैठकर कुछ ही पलों में सुनामी लहरों की सूचना मिल जाती है। दुनिया की सूचनाओं से हम रू–ब–रू होते रहते हैं। श्रव्य तथा दृश्य माध्यमों को विज्ञान की तकनीकों ने एक नई ऊँचाई दी है। जाहिर है कि इन वैज्ञानिक तकनीकों का वैश्वीकरण से जुड़े कारोबार में व्यापक पैमाने पर उपयोग हो रहा है।

हार्वे की एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक ''जैम ब्वदकपजपवद वि च्वेज डवकमतदपजल'' का प्रकाशन 1989 में हुआ। हार्वे के अनुसार वैश्वीकरण एक जटिल प्रक्रिया है। इसके अंतर्गत समय और स्थान की व्याख्या सहज रूपों में संभव नहीं है। यह एक गंभीर मसला है। उन्होंने स्पष्ट किया कि समय और स्थान आरोह–अवरोह के साथ जुड़ा हुआ है। इसमें उतार–चढ़ाव होता रहता है। विशेष रूप से बाजार, ब्याज दर, भौगोलिक गतिशीलता आदि समय और स्थान से संबंधित है। इनमें बढ़त भी होती है। यह लुढ़कती भी है अर्थात् इनमें उतार–चढ़ाव होते रहते हैं।

त्वेम छंन ने अपनी पुस्तक ''ज्नतइनसंदबम पद ॅवतसक च्वसपजपबे'' का प्रकाशन 1990 में हुआ। उनके अनुसार वैश्वीकरण का तकनीकी तंत्र के साथ स्पष्ट एवं तर्कपूर्ण संबंध है। रोज नाऊ के अनुसार दुनिया के विभिन्न हिस्सों में परस्पर निर्भरता तथा सामंजस्य का एक बुनियादी आधार तकनीकी तंत्र है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वैश्वीकरण का संपोषण विभिन्न क्षेत्रों एवं स्रोतों से हो रहा है। उदाहरणस्वरूप उन्होंने उद्योगवाद तथा उत्तर उद्योगवाद को रेखांकित किया है। उनके अनुसार उद्योगवाद तथा उत्तर उद्योगवाद वर्त्तमान दौर में एक राजनीतिक शक्ति है। यह सामाजिक–आर्थिक प्रतिक्रियाओं का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है। अतः इससे वैश्वीकरण का संपोषण होता है। संक्षेप में, रोजे नाऊ के अनुसार वैश्वीकरण की प्रक्रिया तकनीकी यंत्र तथा अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के साथ संबंधित है।

वैश्वीकरण का अभिप्राय अर्थव्यवस्थाओं के बीच आदान–प्रदान तथा सामंजस्य के विविध पक्षों से जुड़ा होना है। उदाहरणस्वरूप वैश्वीकरण के अंतर्गत भारत की अर्थव्यवस्था के साथ सामंजस्य के आधार पर आदान–प्रदान की प्रक्रिया से संबंधित हो गई है। वैश्वीकरण में अब कोई राष्ट्र अलग–थलग नहीं रह सकता है। अनेक विदेशी उत्पादक अब भारत में अपना माल तथा सेवाएँ बेच सकते है। भारत के उत्पादनों को भी दूसरे देशों में बेचा जा सकता है। जाहिर है कि विभिन्न देशों ने अर्थव्यवस्था से जूड़े विभिन्न प्रतिबंधों को शिथिल किया है। वैश्वीकरण मूलतः अर्थव्यवस्था से जुड़ी एक प्रक्रिया है।

ऑगबर्न ने 1992 में प्रकाशित अपनी पुस्तक ''वबपंस बैंदहम' में स्पष्ट किया है कि रेडियों के आविष्कार के साथ 150 प्रकार के परिवर्तनों को रेखांकित किया गया है। जाहिर है कि संचार तकनीकों तथा साधनों के माध्यम से समाज में एक नए युग का आरंभ हुआ है। इसके विकास के कारण भारत में पश्चिमीकरण की प्रक्रिया को एक गतिशील आधार प्राप्त हुआ है। साथ ही वैज्ञानिकता तथा तार्किकता का विकास हुआ है। फलतः आधुनिकीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई है। संचार साधनों ने आर्थिक विकास को सुदृढ़ किया है। वैश्वीकरण तथा आर्थिक उदारीकरण के वर्त्तमान दौर में संचार साधनों की उल्लेखनीय भूमिका है। जाहिर है कि सूचना तकनीक के कारण बहुत ही अधिक रोजगार के अवसर खुल गए है जिसका फायदा मुस्लिम समुदाय के युवाओं को प्राप्त हो रहा है। वैश्वीकरण का अभिप्राय अर्थव्यवस्थाओं के बीच आदान–प्रदान तथा सामंजस्य के विविध पक्षों से जुड़ा होना है। उदाहरणस्वरूप वैश्वीकरण के अंतर्गत भारत की अर्थव्यवस्था के साथ सामंजस्य के आधार पर आदान–प्रदान की प्रक्रिया से संबंधित हो गई है। वैश्वीकरण में अब कोई राष्ट्र अलग–थलग नहीं रह सकता है। अनेक विदेशी उत्पादक अब भारत में अपना माल तथा सेवाएँ बेच सकते है। भारत के उत्पादनों को भी दूसरे देशों में बेचा जा सकता है। जाहिर है कि विभिन्न देशों ने अर्थव्यवस्था से जूड़े प्रतिबंधों को शिथिल किया है। वैश्वीकरण मूलतः अर्थव्यवस्था से जुड़ी एक प्रक्रिया है।

वैश्वीकरण ने विश्व की अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा प्रदान की है। अर्थव्यवस्था से जुड़े विभिन्न देशों के नियमों एवं परिनियमों के अवरोधों को शिथिल किया गया है। पूँजी तथा श्रम से जुड़े अवसरों को उत्पन्न किया गया है। अर्थव्यवस्था की रफ्तार में तेजी आई है। छोटे–बड़े नगरों में बाजार ने चकाचौंध पैदा की है। दुनिया के दरवाजे और खिड़कियाँ खोल दिए गए है। वैश्वीकरण ने मुस्लिम समुदाय के लोगों के लिए भी नए–नए रोजगार को पैदा किया है। अधिकांश मुस्लिम समुदाय अब वैश्वीकरण के कारण नए–नए रोजगार से लाभान्वित हो रहे है।

वैश्वीकरण के कारण सबसे अधिक विकास मोबाईल के क्षेत्र का ही हुआ है। जिस कारण मोबाईल के क्षेत्र में रोजगार में काफी वृद्धि हुई है। जाहिर है कि मोबाईल वर्त्तमान समय में सूचना तकनीक का सबसे अहम साधन बन गया है। प्रत्येक व्यक्ति के पास कम से कम एक मोबाईल तो जरूर मिल जाता है। जिस कारण इसका रोजगार व्यापक तौर पर हो रहा है।

मोबाईल से जुड़े रोजगारों के कारण मुस्लिम युवाओं में इस रोजगार के प्रति बहुत ही ज्यादा आकर्षण को अनुभव किया जा सकता है। दरभंगा नगर के प्रत्येक चौक पर एक–दो मोबाईल का दुकान खुल गया है। जिसमें अधिकांश दुकान मुस्लिम समुदाय के लोगों का ही है। 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं का इस संबंध में सकारात्मक उत्तर पाया गया।

तालिका–1

उम्र समूह स्तर	अभिमत			
	हाँ		नहीं	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
18 से 24	14	07.00	16	08.00
25 से 31	30	15.00	26	13.00
32 से 38	34	17.00	30	15.00
39 से अधिक	32	16.00	18	09.00
योग	110	55.00	90	45.00

एक अध्ययन के दौरान 55 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि सूचना एवं तकनीक के क्षेत्र में भी मुस्लिम समुदाय के लोग अधिक लाभांवित हो रहे है। जबकि 45 प्रतिशत उत्तरदाताओं का इस संबंध में नकारात्मक उत्तर पाया गया। तालिका–1 के आधार पर उपरोक्त तथ्यों का स्पष्टीकरण हो जाता है।

वैश्वीकरण ने विश्व की अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा प्रदान की है। अर्थव्यवस्था से जुड़े विभिन्न देशों के नियमों एवं परिनियमों के अवरोधों को शिथिल किया गया है। पूँजी तथा श्रम से जुड़े अवसरों को उत्पन्न किया गया है। अर्थव्यवस्था की रफ्तार में तेजी आई है। दुनिया के दरवाजे और खिड़कियाँ खोल दिए गए है। वैश्वीकरण ने मुस्लिम समुदाय के लोगों के लिए भी नए–नए रोजगार को पैदा किया है। अधिकांश मुस्लिम समुदाय अब वैश्वीकरण के कारण नए–नए रोजगार से लाभान्वित हो रहे है।

संदर्भ सूची :

1. Yazbeck Haddad, Yvonne; Esposito, John (1998), Islam, Geudev and Social Change, New York Oxford University Press.
2. Steger, Manfred (2002) Globalism, The New Market Ideology, London, Rowman Publishers.
3. Development of Freedom, Oxford Press
4. Khan, JOELS (2001) Modernity and Exclusion.

5. International Trade and Globalization, Smith Charles (2007)
6. BBC News Online, Islam and the West, August, 2002
7. Berman Sheri (2003), Islamic, Revolution and Civil Society
8. Carpenter, John, Puritian Missions as Globalization, Fides Ettlistoria (1999)
9. Daromir Rudnyckyl (2010), Spiritual Economics : Islam, Globalization and the Alterlife of development, Cornell University Prè